

**अपुनरावर्ती वि.** (तत्.) 1. जिसकी पुनः आवृत्ति न हो 2. फिर नहीं आने वाला या न लौटने वाला।

**अपुनरावृत्ति स्त्री.** (तत्.) पुनरावृत्ति न होने या दोहराए न जाने की स्थिति।

**अपुनर्भव वि.** (तत्.) 1. जो दुबारा न हो, फिर नहीं होने वाला। 2. पुनः जन्म न लेने वाला।

**अपुरुष पुं.** (तत्.) नपुंसक, हिजड़ा वि. अमानुषिक, अमानवोचित, कायर विलो. पुरुष।

**अपुष्कल वि.** (तत्.) 1. जो पुष्कल अर्थात् अत्यधिक, पर्याप्त या बहुत काफी न हो, अप्रभूत, थोड़ा, अपर्याप्त।

**अपुष्ट वि.** (तत्.) 1. जिसका (ढंग से) पोषण न हुआ हो 2. दुर्बल, दुबला, कमजोर 3. मंद, क्षीण 4. जिसकी पुष्टि न हो।

**अपुष्ट समाचार पुं.** (तत्.) वह समाचार जिसका कोई प्रामाणिक स्रोत विदित न हो।

**अपुष्ट स्रोत पुं.** (तत्.) वह स्रोत जिसे सम्यक् परिभाषित नहीं किया जा सकता हो।

**अपुष्टि स्त्री.** (तत्.) 1. पुष्ट न होने की स्थिति पोषण-हीनता 2. दुर्बलता 3. आयु. असंतोषजनक पोषण के कारण शरीर के किसी अंग या ऊतक के आकार या उसकी कार्यक्षमता आदि में कमी 4. पुष्टि अथवा सप्रमाण समर्थन का अभाव।

**अपुष्प वि.** (तत्.) पुष्पहीन, न फूलनेवाला पुं. गूलर का पेड़।

**अपुष्पी पादप पुं.** (तत्.) वे पादप जिनमें पुष्प नहीं होते विलो. पुष्पी पादप।

**अपूज्य वि.** (तत्.) जो पूजा या सम्मान के योग्य न हो विलो. पूज्य।

**अपूठ वि.** (तत्.) 1. जो पुष्ट या विकसित न हो, अपुष्ट, अधूरा 2. जिसके पास पूरा ज्ञान न हो।

**अपूत वि.** (तत्.) अपुत्र, पुत्रहीन, निपूता।

**अपूरा वि.** (तत्.सं.आपूर्ण) 1. भरा-पूरा, विस्तृत 2. अधूरा।

**अपूर्ण वि.** (तत्.) 1. जो पूर्ण न हो, अधूरा 2. कम, अल्प विलो. पूर्ण।

**अपूर्ण पक्ष पुं.** (तत्.) व्याक. वह क्रिया रूप जिसमें कार्य-व्यापार वक्ता के कथन या लिखित अभिव्यक्ति तक पूर्ण हुआ नहीं माना गया है (अर्थात् शुरू किया गया कार्य अभी तक चल रहा है)। उदा. वह दिल्ली आया है और अभी तक यहीं है imperfect aspect विलो. पूर्ण पक्ष दे. पक्ष।

**अपूर्ण पुष्प पुं.** (तत्.) पुष्प जिसमें नर पुंकेसर तथा स्त्रीकेसर दोनों अंग न हों विलो. पूर्ण पुष्प।

**अपूर्ण प्रतियोगिता स्त्री.** (तत्.) अधूरी प्रतिद्वंद्विता या होड़, अधूरा विरोध।

**अपूर्णता स्त्री.** (तत्.) 1. अधूरापन 2. न्यूनता, कमी विलो. पूर्णता।

**अपूर्णत्व वि.** (तत्.) अधूरेपन का भाव, अधूरापन, कमी।

**अपूर्णभूत पुं.** (तत्.) क्रिया के भूत काल के रूप का एक भेद जिसमें क्रिया की समाप्ति की प्रतीति नहीं होती।

**अपूर्ण हक पुं.** (तत्.) विधि. किसी वस्तु पर अधिकार सिद्ध करने वाले पर्याप्त अभिलेखों के न होने के कारण असिद्ध हक imperfect title

**अपूर्णांश पुं.** (तत्.) गणि. साधारण लघुगणक के मान का दशमलव के बाद का भाग विलो. पूर्णांश।

**अपूर्ति स्त्री.** (तत्.) 1. पूर्ति, प्रदाय या संभरण का न होना 2. पूरा न होने की स्थिति 3. निर्धारित शर्तों का पूरा (पालन) न किया जाना।

**अपूर्व वि.** (तत्.) 1. जो पहले न रहा हो 2. अनुपम 3. अद्भुत, अनोखा, विलक्षण पुं. 1. परमात्मा, परब्रह्म 2. अदृष्ट फल।

**अपूर्वता स्त्री.** (तत्.) 1. पहले न होने की स्थिति 2. विलक्षणता, अनोखापन।

**अपूर्वत्व पुं.** (तत्.) 1. पहले नहीं होने का भाव 2. अजनबीपन 3. अद्भुत होने का भाव।